Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (Third Year)

Subject: Hindi

Course Code: HND - 105

Paper Title: भारतीय साहित्य

Module Name: जगन्नाथ प्रसाद दास- संप्रदाय (उड़िया)

Module No: 09

Name of the Presenter: Dr. Ranjita Parab

Notes:

संप्रदाय

संप्रदाय कहानी के कथानक पर अगर विचार करे तो यह कहानी आज के वर्तमान युग में स्वार्थ के लिए हो रहे संप्रदायीक दंगो पर व्यंग करती है । आज किस तरह से स्वार्थी लोग या राजनैतिक दल अपने फायदे केलिए बेसहाय जनता को अपने जुल्म का शिकार बनाती है ,इसकी यह कहानी है ।

कहानी का कथानक कुछ इस प्रकार है एक उपनगर में एक पागल आदमी रहता है ,। जिसका ना कोई धर्म है ना जाती है ,। उसका वास्तविक नाम तक उसको पता नहीं । उसके होने न होने से किसीको कुछ भी फरक नहीं पड़ता । उसके रहने की न कोई निश्चित जगह है न खाने की। वह किसी से कुछ मांगता नहीं था और किसीके कुछ देने से इन्कार भी नहीं करता था, बस यहाँ वहा घूमता रहता था । किसी को उससे कोई तकलीफ नहीं थी लेकिन पागल को लेकर समस्या तब पैदा हुई जब शहर में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो जाते क्योंकि पागल की बिखरी ,

अव्यवस्थित दाढ़ी को लेकर हिंदु उसे मुसलमान समझकर पिटते तथा मुस्लिम लोग हिंदु साधू समझकर ।

बार होते रहते थे-राजनैतिक लोगों के आदेश पर यह दंगे बार। इसके पीछे अनेक अलिखित नियम थे । रात को शहर से छुटभैये नेतागण अपने राजनितिक चेलों के साथ दंगों का षड्यंत्र रचा करते थे और सुबह बरगत के नीचे वाली चाय की दूकान से विधिवत दंगे फसाद शुरू हो जाते थे । बरगत के नीचे आसपास चाय की दो दुकाने थी । एक हिंदु चायवाले की दूकान और दूसरी मुसलमान चायवाले की दूकान । वहा के लोग व्यंग से मुसलमान चायवाले को महात्मा कहकर बुलाते थे ।

इन होनेवाले दंगों की खबर न तो पुलिस को रहती न ही सरकारी मुलाजिमों को लेकिन दंगों की खबर अन्य लोगों तक पहुंच जाती थी । इस कहानी में मुख्य रूप से दंगलों का चित्रण किया गया है।

पागल रोज की तरह दंगे वाले दिन भी चाय की दूकान के पास इस आशा से बैठता की दे -उसे कोई चाय दे। लेकिन उस दिन किसी ने उसकी और देखा तक नहीं । कुछ देर बाद एक सम्प्रदाय की भीड़ वहा जमा हो जाती है और नारेबाजी शुरू हो जाती है । बेचारा पागल किसी से चाय न पाकर उसी भीड़ के पास खडा हो जाता है और मुखमुद्रा इस तरह से करने लगता है कि मानो वह भीड़ के साथ नारेबाजी कर रहा हो । उस उन दंगेखोरों ने आस पास की-सारी चीजे तोड़ फोड़ दी थी, जमकर नारेबाजी भी हुई, तभी किसी को ध्यान आया कि किसी मुसलमान को हानी नहीं पहुँचाई गयी है । अब सबकी निगाह उस बेचारे पागल पर पड़ी और अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए उस बेचारे पागल को चार लड़कों ने मुल्ला कहकर उसकी खूब धुलाई की तथा महात्मा गांधीजी की जय के नारे लगाते हुए भीड़ वहा से रफूचक्कर हो गयी ।

सभी स्थिति को पहले की तरह करने में लग गए । पागल भी उठ कर बैठ गया मानो कुछ हुआ ही नहीं पुलिस आयी और अपना काम करके चली गयी । शाम को बरगद के पेड़ के

नीचे फिर से भीड़ इकट्ठा हो गयी । सब ये भी भूल गए की सुबह यहाँ कोई भयंकर घटना हुई थी ।

सच कहे तो पहले इन साम्प्रदायेक दंगों मेंभयंकरनुमा कुछ नहीं होता था क्योंकि उन दंगे फसादों के कुछ नीति नियम थे । लेकिन समय के साथधीरे -साथ यह नीति नियम भी धीरे-सेबदलते चले गये। युवकों ने बुजुर्गों के हातों से सत्ता अपने हात ले ली और सब कुछ बदल गया । न कोई नियम था और न कोई रोक टोक ।

इस बार फिर से नेता गण आये अपने चेलों से इसबार उनकी बातचीत ,बिल्कुल भिन्न थी । अब कितना नुकसान हुआ कितने लोग मारे गए यह बात पूछी जाने लगी ?। न किसी का ज्यादा नुकसान हुआ और न ही किसी की जीवित हानी हुई यह देख कर नेता गण असंतृष्ट हुए और कहने लगे कि लगता है `तुम नामर्द हो' । दंगा बड़ी गंभीर चीज हैतुम लोग उसे मजाक , और देखते ही देखते उन्होंने पूरी रात भर अपने चेलों को भयंकर दंगो के लिए ? समझते हो तैयार कर ही लिया।

इस बार दंगे में लड़कों ने पहली बार महात्मा की दूकान को आग लगाई और पागल के हाथ-पैर तोड़ डाले । फिर से सारा वातावरण शांत हो गया । इस बीच नेता गण आये और शांती सद्भाव के नारे देने लगे । जिन्होंने आग लगायी वे ही शांती की दुवायी दे रहे थे ।

ठाक रहा लेकिन फिर से-कुछ दिन तक सब कुछ ठिकदंगे शुरु होने ही वाले थे । अबकी बार हिंदु सिख दंगे भी हुए-हिंदु ,मुस्लिम ही नहीं-तथा हिंदु- सिख भाई- भाई के बदले हिंदु मुस्लिम भाईभाई के नारे सुनाई देने लगे और पागल की बदनसीबी यह थी कि उसे अकाली -बना दिया और उसे लंगड़ा सरदार कहकर मारने लगे।

हर बार कोई भी सम्रदाय के दंगे होतो पागल जो की सामान्य भोलीभाली जनता का -प्रतीक था उसको क्षतीपहुंच ही जाती । उसमें उसका कोई कसूर हो ना हो । निकट भविष्य में जो भी दंगे हुए पुलिस को छोड़कर बाकी सबको उसकी खबर थी । इसी कारण अल्पसंख्यांक सम्प्रदाय के लोग सुरक्षित जगह पर चले गए थे । यहाँ तक की हिंदु चायवाला भी चला गया था

। लेकिन फिर से महात्मा ने सोचा अबकी बार भी कुछ नहीं होगा । लेकिन इस बार दंगों का रूप बदल गया था । गरम रक्त था इस बार । लडके चाक़ू से पागल को मारने दौड़े थे । महात्मा भी उनको पहचान न सका क्योंकि उनके चेहरों की भाव भंगिमा से वह बिलकुल अपरिचित था -। पागल उसकी दूकान की और भागा तभी वहा महात्मा को पाकर किसी ने साले मुसलमान को ' महात्मा वही गिर पड़ा ,मारो कहके महात्मा की छाती में चाक़ू धंसा दिया। वह भीड़ आगे चली गयीपागाल वहा महात्मा को उठाने की कोशिश करता रहा पर तब तक उसके प्रा ,ण पखेरू उड़ चुके थे, तभी वहा एक जीप आकार रुकी, पागल के मुख से पहली बार मदत के लिए आवाज़ निकली । पर क्या वह शहर के दायित्व सम्पन्न नेता थे । मदत तो दूर की बात वे जोरज़ोर - से हसने लगे और उलटा पागल को पेड़ से बांधकर उस पर पेट्रोल उड़ेल दिया गया और उसको पूछा गया कि तुम किस संप्रदाय से हो? लेकिन पागल से कोई जवाब ना पाकर उसको संप्रदाय के नाम पर बली चड़ा दिया गया, इसमें उसका ना कोई कसूर था ना कोई फायदा ।

पात्र एवं चरित्र -चित्रण

पागल:- पागल जिसका न कोई धर्म था ना गोत्र ना जाति, उसके उपनगर में होने न होने से किसी को कुछ फरक नहीं पड़ता था, लेकिन जब कभी सांप्रदायिक दंगे होते थे तब हर कोई उसका इस्तमल अपने फायदे के लिए करता था।

महात्मा :- महात्मा धर्म से मुस्लिम था, लेकिन स्वभाव से शांत सरल तथा सच्चा था, लेकिन अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए समाज के कुछ लोग उसकी बली चड़ा देते हैं ।

- संप्रदाय कहानी में चित्रित समस्याएँ ।

- संप्रदाय कहानी में सांप्रदायिकता के माध्यम से समाज में किस तरह से अहिष्णुता फैलायी जाती है इसका चित्रण किया गया है ।
- आज राजनैतिक लोग अपने फायदे के लिए किस तरह से सांप्रदायिकता को बढ़ावा दे रहे हैं, इस का चित्रण भी कहानी में किया गया है ।

परिवेश :

- कहानी के देश कल वातावरण की अगर चर्चा करें तो, पूरे कहानी में सामाजिक परिवेश के साथ राजनैतिक परिवेश में कहानी का ताना-बाना बुना गया है।
- कहानी में राजनैतिक मतलब के लिये समाज में किए जानेवाले सांप्रदायिक दंगे एक अलग वातावरण की निर्मिति करते हैं।

- **शीर्षक की सार्थकता**:- सम्प्रदाय कहानी के शीर्षक की सार्थकता की अगर बात करे तो यह शीर्षक इस कहानी के लिए सार्थक है क्योंकि इस कहानी में सांप्रदायिकता की वजह से कैसे लोग एक दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं इस बात को दर्शाया गया है।
- राजनैतिक लोग कैसे अपने फ़ायदों के लिए सांप्रदायिकता को बढ़ावा देते हैं, तथा सांप्रदायिक दंगे फ़सादों भड़काते हैं इसकी यह कहानी ज्वलंत उदाहरण है ।

उद्देश्य :

- कहानी के उद्देश्य की अगर चर्चा करें तो हम कह सकते हैं, कि समाज में फैली सांप्रदायिकता के जहर और उसके बुरे परिणामों से समाज को रूबरू कराना कहानी का मुख्य उद्देश्य है।
- किस तरह से समाज में राजनीतिक फायदों के लिए, तथा अपने मतलब के लिए भोली-भाली जनका का कैसे शोषण किया जाता है,यह कहानी के माध्यम से बताकर समाज को जागृक करना भी कहानी का उद्देश्य है।

- **भाषा:** कहानी की भाषा अत्यंत सहज, सरल तथा पात्रानुकूल हैं।
- कहानी में जोकि सांप्रदायिक दंगों का चित्रण किया गया है, तो गाली- गलोच जैसे शब्दों का भी प्रयोग हम कहानी में देख सकते हैं।
- **शैली** : कहानी में मुख्य रूप से वर्णनात्मक शैली, चित्रात्मक शैली तथा संवादात्मक शैली का प्रयोग हुआ हैं।